समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 02 September 2026

सामाजिक प्रतिबद्धता से महिला एवं किशोरी सशक्तिकरण की प्रेरणादायक यात्रा : शिला सुमन उमेश भोजने ने हजारों महिलाओं और किशोरियों तक पहुंचाई जागरूकता व सहयोग की पहल

Sanket Morankar
Published on 01 Sep 2026

समाज में सकारात्मक बदलाव केवल बड़े अभियानों से नहीं, बल्कि लोगों की समस्याओं को समझकर उनके साथ खड़े होने से शुरू होता है। इसी विचार को अपने सामाजिक कार्य का आधार बनाकर ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं, किशोरी बालिकाओं और जरूरतमंद परिवारों के लिए लगातार काम करने वाली सामाजिक कार्यकर्ता हैं **शिला सुमन उमेश भोजने**।

महिला सशक्तिकरण, किशोरियों के स्वास्थ्य एवं शिक्षा, बाल विवाह रोकथाम, सामाजिक जागरूकता और जरूरतमंद परिवारों की सहायता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में शिला भोजने ने प्रत्यक्ष रूप से कार्य किया है। उनका सामाजिक कार्य जामखेड, औसा, तुळजापूर और लोहारा जैसे ग्रामीण क्षेत्रों तक फैला हुआ है।

उनकी कार्यशैली की खासियत यह रही है कि वे केवल समस्या पहचानने तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि उपलब्ध संस्थाओं, संसाधनों और सरकारी व्यवस्थाओं के माध्यम से जरूरतमंद लोगों तक अवसर और सहायता पहुंचाने का प्रयास करती रही हैं।

महिलाओं से संवाद के माध्यम से शुरू हुआ सामाजिक सफर

शिला भोजने का सामाजिक कार्य महिलाओं के साथ प्रत्यक्ष संवाद से विकसित हुआ। ग्रामीण क्षेत्रों में काम करते हुए उन्होंने महसूस किया कि महिलाओं के सामने सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य और पारिवारिक स्तर पर कई तरह की चुनौतियां मौजूद हैं।

महिलाओं को उनकी क्षमता का एहसास कराना, उन्हें एकजुट करना, उपलब्ध अवसरों की जानकारी देना और सामाजिक मुद्दों पर संवाद तैयार करना उनके कार्य का महत्वपूर्ण हिस्सा बना।

2019 से 2023 के दौरान उन्होंने **स्वयं शिक्षण प्रयोग** के साथ कार्य किया। इस अवधि में वे लगभग **10,300 महिलाओं से जुड़े कार्यों** का हिस्सा बनीं। इतने बड़े स्तर पर महिलाओं से संवाद के कारण उन्हें ग्रामीण महिलाओं की वास्तविक जरूरतों और

चुनौतियों को करीब से समझने का अवसर मिला।

इसी अनुभव ने उन्हें सामाजिक क्षेत्र में और व्यापक रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

हॅलो मेडिकल फाउंडेशन के साथ सामाजिक कार्य को मिली नई दिशा

2024 से शिला भोजने हॅलो मेडिकल फाउंडेशन के साथ कार्यरत हैं। इस माध्यम से उन्होंने महिलाओं और किशोरी बालिकाओं से जुड़े विभिन्न सामाजिक, स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक उपक्रमों में योगदान दिया है।

इस दौरान लगभग **5,000 महिलाओं से जुड़े विभिन्न कार्यों** में उन्होंने सहभागिता की है।

विशेष रूप से किशोरी बालिकाओं के स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़े विषयों पर जागरूकता निर्माण उनके सामाजिक कार्य का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

किशोरी बालिकाओं के स्वास्थ्य और शिक्षा पर विशेष जोर

किशोरावस्था किसी भी लड़की के जीवन का बेहद महत्वपूर्ण चरण होता है। इस उम्र में सही स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, शिक्षा, सुरक्षित वातावरण और अपने भविष्य को लेकर निर्णय लेने की क्षमता मिलना बेहद जरूरी है।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शिला भोजने ने **13 से 18 वर्ष की किशोरी बालिकाओं** के लिए स्वास्थ्य शिविरों और शैक्षणिक जागरूकता कार्यक्रमों में कार्य किया।

किशोरियों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना, शिक्षा का महत्व समझाना, भविष्य के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करना और उपलब्ध अवसरों की जानकारी देना उनके कार्य का प्रमुख हिस्सा रहा।

उनका मानना है कि किसी लड़की को केवल सहायता देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे **ज्ञान, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता** प्रदान करना अधिक महत्वपूर्ण है।

बाल विवाह रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान

ग्रामीण क्षेत्रों में बाल विवाह आज भी लड़कियों की शिक्षा और भविष्य के सामने एक गंभीर चुनौती बन सकता है। बाल विवाह के कारण शिक्षा प्रभावित होने के साथ-साथ लड़कियों के विकास के अवसर भी सीमित हो सकते हैं।

इस सामाजिक चुनौती को ध्यान में रखते हुए शिला भोजने ने **बाल विवाह रोकथाम शिविरों और जागरूकता कार्यक्रमों** में सक्रिय सहभागिता की।

उन्होंने किशोरियों, अभिभावकों और समाज के विभिन्न वर्गों के साथ संवाद करते हुए बाल विवाह के दुष्परिणामों, लड़कियों की शिक्षा और उचित उम्र में सही निर्णय लेने के महत्व को समझाने का प्रयास किया।

उनके कार्य में केवल किशोरियों तक पहुंचना ही उद्देश्य नहीं रहा, बल्कि परिवार और समाज की सोच में सकारात्मक बदलाव लाने पर भी जोर दिया गया।

आर्थिक रूप से जरूरतमंद लड़कियों के लिए शैक्षणिक सहयोग

आर्थिक परिस्थितियों के कारण कई बार लड़कियों की शिक्षा प्रभावित होती है। ऐसी स्थिति में आवश्यक शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध कराना उनके लिए महत्वपूर्ण सहयोग बन सकता है।

शिला भोजने ने आर्थिक रूप से जरूरतमंद बालिकाओं को **शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध कराने के उपक्रम** में योगदान दिया। इसका उद्देश्य यह रहा कि आर्थिक कठिनाइयों के कारण उनकी शिक्षा रुकने न पाए और उन्हें पढ़ाई जारी रखने के लिए आवश्यक सहयोग मिल सके।

यह पहल केवल सामग्री देने तक सीमित नहीं रही, बल्कि लड़कियों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने का माध्यम भी बनी।

कोविड संकट के दौरान 362 परिवारों की मदद

2020 मे कोरोना महामारी के दौरान समाज के सामने अभूतपूर्व संकट खड़ा हुआ था। अनेक परिवारों की आय प्रभावित हुई और

रोजमर्रा की आवश्यकताओं को पूरा करना भी मुश्किल हो गया था।

ऐसे कठिन समय में शिला भोजने ने अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता के तहत **362 जरूरतमंद परिवारों को किराना सामग्री और मास्क उपलब्ध कराए।**

उन्होंने व्यक्तिगत सामाजिक पहल के माध्यम से जरूरतमंद परिवारों तक पहुंचकर उनकी सहायता की। संकट के समय लोगों के बीच जाकर उन्हें आवश्यक सहयोग प्रदान करना उनके सामाजिक सफर का महत्वपूर्ण पड़ाव रहा।

महिलाओं से किशोरियों तक कार्य का विस्तार

शिला भोजने के सामाजिक कार्य की महत्वपूर्ण विशेषता यह रही है कि उन्होंने महिलाओं और किशोरी बालिकाओं—दोनों वर्गों को अपने कार्य का केंद्र बनाया।

महिलाओं के साथ काम करते हुए उन्हें परिवार और समाज में महिलाओं की भूमिका, उनकी चुनौतियों और उपलब्ध अवसरों को समझने का अवसर मिला। वहीं किशोरियों के साथ काम करते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और भविष्य की संभावनाओं के महत्व को करीब से समझा।

इसीलिए उनके कार्य में **महिला सशक्तिकरण और किशोरी बालिकाओं के उज्ज्वल भविष्य** को एक-दूसरे से जुड़ी हुई प्राथमिकताओं के रूप में देखा गया।

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्यक्ष जनसंपर्क

शिला भोजने ने विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के बीच जाकर प्रत्यक्ष संपर्क और संवाद के माध्यम से काम किया है।

उनके प्रमुख कार्यक्षेत्रों में शामिल रहे हैं:

- **जामखेड – जिला अहिल्यानगर**
- **औसा – जिला लातूर**
- **तुळजापूर – जिला धाराशिव**
- **लोहारा – जिला धाराशिव**

ग्रामीण सामाजिक समस्याओं को समझने के लिए केवल कार्यालय स्तर पर काम करना पर्याप्त नहीं होता। लोगों के बीच जाकर उनकी वास्तविक परिस्थितियों को समझना और उनके साथ संवाद करना आवश्यक होता है। इसी दृष्टिकोण को उन्होंने अपने सामाजिक कार्य का आधार बनाया।

सामाजिक कार्य के लिए मिले सम्मान

सामाजिक क्षेत्र में उनके योगदान की दखल लेते हुए शिला भोजने को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

उन्हें प्राप्त प्रमुख सम्मान हैं:

1. **रणरागिणी पुरस्कार**
2. **गुणगौरव पुरस्कार**
3. **राष्ट्रीय दामिनी पुरस्कार**
4. **आयडॉल वुमन पुरस्कार**

ये सम्मान उनके सामाजिक कार्य की सराहना के साथ-साथ भविष्य में और अधिक काम करने के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने हैं।

'सावित्रीबाई चॅरिटेबल ट्रस्ट' के माध्यम से व्यापक कार्य का संकल्प

अब तक के सामाजिक अनुभव से शिला भोजने को अपने कार्य को अधिक संगठित और व्यापक स्तर पर आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिली है।

इसी उद्देश्य से भविष्य में "**सावित्रीबाई चॅरिटेबल ट्रस्ट, तुळजापूर**" की शुरुआत करने की उनकी योजना है।

इस माध्यम से महिलाओं, किशोरी बालिकाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक जागरूकता और जरूरतमंद वर्गों के लिए विभिन्न सामाजिक उपक्रम चलाने का उनका मानस है।

इस उपक्रम का नियोजित कार्यक्रम **6 दिसंबर 2026 को त्रिमूर्ती हॉल, तुळजापूर** में आयोजित करने की योजना है।

प्रसिद्धि से अधिक समाज के लिए काम करने की भावना

शिला भोजने के सामाजिक कार्य के पीछे किसी पुरस्कार या प्रसिद्धि की अपेक्षा से अधिक समाज के जरूरतमंद लोगों के लिए कुछ सकारात्मक करने की भावना दिखाई देती है।

उनके कार्य का मूल विचार है कि समाज परिवर्तन के लिए हमेशा कोई बहुत बड़ा अभियान आवश्यक नहीं होता।

किसी एक परिवार की मदद करना, किसी एक लड़की को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना, किसी अभिभावक को बाल विवाह के दुष्परिणाम समझाना या किसी महिला को उसकी क्षमता का एहसास कराना भी परिवर्तन की शुरुआत बन सकता है।

यही सोच उनके सामाजिक कार्य को निरंतर दिशा देती रही है।

शिला सुमन उमेश भोजने का सामाजिक कार्य महिलाओं और किशोरी बालिकाओं के सशक्तिकरण, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की प्रेरणादायक मिसाल है।

2019 से महिलाओं के साथ शुरू हुई उनकी सामाजिक यात्रा, स्वयं शिक्षण प्रयोग के साथ हजारों महिलाओं तक पहुंच, **2020 मे कोविड संकट के दौरान 362 परिवारों को सहायता**, **2024 से हॅलो मेडिकल फाउंडेशन के साथ महिला एवं किशोरी केंद्रित कार्य**, बाल विवाह रोकथाम के लिए जागरूकता और जरूरतमंद बालिकाओं को शैक्षणिक सहयोग—इन सभी प्रयासों ने उनके सामाजिक कार्य को लगातार व्यापक बनाया है।

आज शिला भोजने महिलाओं और किशोरी बालिकाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और विकास के अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में योगदान दे रही हैं। उनके कार्य के लिए मिले विभिन्न पुरस्कार उनकी सामाजिक यात्रा को सम्मान देते हैं, जबकि प्रस्तावित **सावित्रीबाई चॅरिटेबल ट्रस्ट** उनके भविष्य के सामाजिक कार्य को और व्यापक दिशा देने की संभावना रखता है।

"एक महिला और एक बेटी सक्षम होती है, तो परिवार मजबूत होता है ; और मजबूत परिवार ही मजबूत समाज की नींव बनता है।"

इसी विश्वास के साथ शिला भोजने की सामाजिक यात्रा आगे बढ़ रही है—**अधिक महिलाओं तक पहुंचने, अधिक किशोरियों को जागरूक करने और समाज मे संकारात्मक बदलाव की नई दिशा बनाने के संकल्प के साथ।**

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.